आन्ध्र में और दूसरे सूबों में हो रहा है यह उसी साजिश का नतीजा है (व्यवधान)...

श्री उपसभापति : ठीक है, बैठ जाइये आप । (व्यवधान)

SHRi. SURESH KALMADI: Top senior officials have been sent to Karnataka to destabilise that Government. Rs. 25! lakhs are being given to MLAs. The Congress (I) is creating law and order situation in Bijapur district and the police had to resort to firing. I want to bring to the notice of this august House... *{Interruptions).* I want to inform this House that Congress (I) is trying to creat$_e$ communal troubles in Karnataka and Andhra Pradesh. After Jammu and Kashmir, they are now active in Karnataka and Andhra Pradesh. . *(Interruptions)* .

MR. DEPUTY CHAIRMAN: First hear me. I cannot allow any debate at this stags. . . *(Interruptions).*

SHRIMATI MONIKA DAS (Karnataka) : This is a serioxis matter. We want to discus it... *(Interruptions).*

MR. DEPUTY CHAIRMAN; If both sides Waal a discussion on any matter, I can allow a discussion... *(Interruptions).* Now this matter is over . . . *(Interruptions).* You said something and they saiu something. How, let us proceed with the busines.. .. .*(Interruptions).* If yon want a discussion on any matter, please give me notice. E will consider it . . . *(Interruptions)*

SHRI SURESH KALMADI: We want .'! Calling Attention on this toppling game in karmataka ... *(Interruptions)*

SHRIMATI MONIKA DAS: We also want to discuss it.

MR 3EPUTY CHAIRMAN: Mrs. Monika Das, I cannot allow any discussion now. We will discuss Karnataka, when thi tim$_e$ comes to discuss, it.

Now Calling Attention. Shri Kailash; Pati Mishra.

CaUing Atention to a matter of Urgent Public Importance

Situation arising out of Reported movment of extremists to establish an independent 'Kolhan Nation' in Chaibasa Region of Singhbhum District in Bihar

श्री कैलाशपति मिश्र (बिहार) : श्रीमन, बिहार के सिंहभूम जिले के चाइबासा क्षेत्र में एक स्वतंत्र 'कोल्हन राष्ट्र' की स्थापना के लिए उग्रवादियों के कथित आन्दोलन से उत्पन्न स्थिति और इस मामले में सरकार द्वारा की गई कार्यवाही की ओर मैं गृह मंत्री का ध्यान दिलाता हूं ।

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF HOME AFFAIRS (SHRIMATI RAM DULARI SINHA): Sir, areas covering Chaib.""" Sadar, excluding Chaibasa town an Chakradha pur sub-division of Singhbt 3 district n called Kolhan area.

श्री हुक्मदेव नारायण या (बिहार): मेरा एक प्वाइंट आफ आर्डर है । मेरा व्यवस्था का प्रश्न यह है कि मंत्री महोदय सदन में जो बयान दे रही हैं उस की हिन्दी की प्रति नहीं आयी है और जब तक हिन्दी की प्रति हम कों उपलब्ध न करायी जाय तब तक इस स्टेटमेंट को रोका जाय क्योंकि यह संविधान और भाषा फार्मूला के विपरीत है । सदन में हिन्दी और अंग्रेजी की प्रति साथ साथ आनी चाहिए । जब तक हिन्दी की प्रति उपलब्ध न हो तब तक इस कार्यवाही को रोका जाय और हम को हिन्दी की प्रति पहले दिलायी जाये तब यह कार्यवाही आगे चले ।

श्रीमती राम दुलारी सिन्हा : माननीय सदस्य के पास मशीन है। इस का अनुवाद वे हिन्दी में सुन सकते हैं।

श्री उपसभापति : यह ठीक है, लेकिन आप इस का ध्यान रखें कि जब इस तरह आप बयान दें तो अंग्रेजी के साथ हिन्दी की प्रति भी सदस्यों उपलब्ध करायी जाये।

श्रीमती राम दुलारी सिन्हा : आगे से ध्यान रखूंगी।

THE LEADER OF THE HOUSE (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE); Sir, let the Hindi version come and, in the meantime, let the discussion continue. In future, this sort of thing should be avoided.

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Yes.

SHRIMATI RAM DULARI SINHA: S^ .....

In Kolhao area an organisation called Kolhan Raksha Sangh was formed in October, **1978.** The Sangh has been demanding independence of Kolhan tribal belt covering about 1400 villages in Singhbhum district. The Sangh claims that the area which was governed by "Wilkinson's Rules" of 1837 under which all the Executive, Judicial, Revenue and Police powers are vested in tribal village functionaries like Mankis and Mumgas gives them a measure of autonomy.

2. Shri Narayan Janko is reported to be the President. Shri Krishan Chander Hembram the General Secretary and Shri Christ Anand Topno the legal advisor of the Sangh.

3. In 1980-81 Kolhan Raksha Sangh started an agitation for felling valuable forests in Singhbhum district. They have been attacking and even killing adivasis who do not support their demand for a separate Kolhan State. During last 8 months the Sangh is reported to have killed 17 and abducted 49 persons.

4. According to reports, Shri Narayan Jonko and Shri Christ Anand Topno visited London and Geneva in September, 1981. During these visits, they submitted memoranda to the British Government and the United Nations Office demanding independent status for 'Kolhan Government' and membership of U.N. The Sangh also submitted a memorandum in November, 1983 to the Chairman of the CHOGM held at New Delhi requesting ratification of Kolhan Government.

5. The Government is vigilant about the activities of the Sangh and necessary steps have been taken to deal with the situation. Prosecutions have been launched against 16 members of the Sangh by the Bihar Police for offence of sedition under Section 124A and 120-B of I.P.C.

6. The law and order enforcement machinery in the area has been strengthened. Development activites have been intensified in the area particularly for providing drinking water, primary education, medical and fair price shop facilities. It may be mentioned that the Special Central Assistance for supplementing the programmes of Bihar Government has bee_n increased from Rs 15.66 crores in 1983-84 to Rs. 18.23 crores in 1984-85. The Government of Bihar is taking steps for greater participation of the tribals in the local administration both in the developmental an dregulartor yspheres. In order to prevent illegal felling of forests, armed pickets with magistrates have been stationed at sensitive pockets. The local administration has been instructed to look into the grievances of the people and take immediate remedial steps for redressal of the same.

7. The Government is fully seized of the situation and efforts are being made to create a climate of harmony and accelerate the pace of development in the area.

श्री कैलाश पति मिश्र : उपसभापति महोदय, सरकार का जो वक्तव्य है उसमें समस्या की गंभीरता को इस हल्के ढंग से रखने की कोशिश की गई है कि जिससे यह दिखाई दे रहा है कि सरकार मूल समस्या को समझ नहीं रही है। यह कोल्हन राष्ट्र की घोषणा किस आधार पर हुई पहले तो इसे समझने की आवश्यकता है। सिंहभूम के अंतर्गत जो साल वृक्ष का विशाल जंगल है वह एशिया में प्रथम स्तर का जंगल माना जाता है। वन विभाग ने उसे 6 डिवीजनों के अन्तर्गत विभाजित करके सारण्डा, चाई बासा नार्थ, चाईबासा साउथ, पोराहाट, दालभम तथा कोल्हान में रखा है। कोल्हान जंगल इतना घना है, इतनी बड़ी प्रापर्टी है राष्ट्र की जिसके लिए देश को बड़ा गौरव है। लेकिन यह भी सत्य है कि वहां का रहने वाला मूल निवासी आदिवासी है जो कि 38 वर्षों की आजादी के बाद भी आजादी की एक किरण भी उनको देखने को नहीं मिली। जंगल में जाने के लिए पक्की सड़कें नहीं हैं, स्कूल वहां नहीं हैं, अस्पताल नहीं हैं, शुद्ध पीने का पानी उपलब्ध नहीं है, कोई जमीन उनके जीवन में आजीविका का निर्वाह करने के लिए नहीं है। कोई साधन उपलब्ध नहीं है। यही नहीं, परंपरागत जो वनों में रहने वाले अधिकार रखते थे, वह भी उनसे छीन लिया गया है, लेकिन उनका ऐसा चरित्र है, कि वह बहुत सीधे-सादे, भोले-भाले अपनी संस्कृति के लिए बड़े कट्टर हैं, वनों के ऊपर श्रद्धा रखने वाले हैं और वृक्षों की पूजा करने वाले हैं। उनके इस भोलेपन का बहुत वर्षों से लगातार शोषण होता रहा है। सरकारी अधिकारी शोषण करते रहे, ठेकेदार करते रहे, किसी ने नहीं देखा कि उनके जीवन में परिवर्तन आया तो क्या होगा।

इसी बीच में एक षड़यंत्र शुरू हुआ, 13–14 साल पहले दो व्यक्ति वहां पर आए। अतिसिअस राज और मेडुअरी परपिया नामक महिला वहां आई जिसने अपना नाम बदलकर कुमारी ज्योत्सना रख लिया। ये दोनों आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में पढ़े। वैसे वह लड़की केरल की रहने वाली है। लेकिन मिशनरी ऐक्टिविटीज में वह असम में आई। फिर चाईबासा पहुंची। उसके बाद ये चाईबासा रोमन कैथोलिक चर्च में आए। अतिसिअस राज ब्रदर बन गए और कुमारी ज्योत्सना सिस्टर बन गई। ये चर्च में रहते नहीं। वहां पहुंचकर पहला काम उन्होंने यह किया कि सिंहभूम 'एकता' साप्ताहिक अखबार निकाला। उसकी प्रति आप मंगाकर देखेंगे कि लगातार देश के खिलाफ विष वमन हो रहा है। राष्ट्र को तोड़ने, विखंडित करने की प्रवृत्ति को बढ़ाने और उनमें आग भड़काने की बातें उसमें लिखी जाती हैं। कुमारी ज्योत्सना ने वहां पर सबसे बड़ी पत्ता मजदूर यूनियन बनाने का नाटक किया। वह बड़ी कुशल और परिपक्व है। उसने आदिवासियों की भाषा सीखी, उनके रीति,रिवाज सीख लिए, नृत्य गान सीख लिये और उनके बीच में घूमना शुरु किया। जहां कहीं चर्च के स्कूल थे वहां जाकर उसने अनेक टीमें बनाना शुरु कीं। लोपोगुटु में इस प्रकार उनका हक अड्डा बन गया। इसके साथ और कई टीमें बन गई। उसके बाद इन्होंने एक साथ दो काम किए। एक तो जो वहां की राष्ट्रीय सम्पत्ति है, जो साल वृक्ष का जंगल है, जिनको मेच्योर्ड होने में कम से कम 80 साल लग जाते हैं, इस घने जंगल

[श्री कैलाश पति मिश्र]

की कटाई का अभियान शुरू किया । देश की इतनी बड़ी संपत्ति की सफाई शुरू कर दी । सरकार को अभी तक यह मालूम नहीं है । मैं पूछना चाहता हूं कि आपके पास कोई ठोस आंकड़े हैं? मैं आपको बताना चाहता हूं कि जितने भी लोगों से मैं मिला हूं उन्होंने जानकारी दी है कि उस जंगल के अन्दर 18 से 20 हजार एकड़ के जंगल की पूरी सफाई हो गई है।

जहां तक सरकारी अधिकारियों का सवाल है, कोई स्कूल का टीचर हो, कोई अस्पताल का डाक्टर हो, कोई फारेस्ट डिपार्टमेंट का अफसर हो, कोई रिलीफ आफिसर हो, उसकी हिम्मत नहीं है कि वह जंगल में रहे । सब चाईबासा में आकर डेरा डाले हुए हैं । हिम्मत नहीं होती कि अंदर जाए । वहां कई घटनाएं हुई और उसमें कइयों की हत्याएं हुई, लोगों को जला दिया गया । अब तमाशा शुरू हुआ कि ग्राम रक्षा दल की स्थापना की गई । हथियार भरने शुरू किये हैम्बरनम के नेतृत्व में, सरकार ने और चीजों का नाम भी लिया है । उनके नेतृत्व में उग्र आन्दोलन शुरू किया । गांव के भोले-भाले आदिवासी अगर उनकी पहुंच में नहीं जाते तो उनकी हत्या कर दी जाती है । एक-एक गांव में 20–20, 25–25 की हत्या हो रही है । गत वर्ष की ही घटना है कि एक स्थान पर 13, एक गांव में 6 जो कि उनके कब्जे में जाने को तैयार नहीं थे तो उनको पकड़ लिया गया और टुकड़े-टुकड़े में शरीर काट दिया गया । काट कर नदी में लाकर फेंक दिया । खबर सरकार को मिली और बड़ी सूझ-बूझ के साथ पुलिस गई । सूझबूझ के साथ जो पुलिस गई वह न लाश पकड़ पाई और न लाश के टुकड़े को पकड़ पाई और न ही कोई हथियार अपने कब्जे में लिये । जुलाई महीने की घटना है चाईबासा से चालीस किलोमीटर दूर भभरिया गांव है और उसके बगल में चार किलो मीटर दूर अप्रैल महीने में भी एक घटना घटी । 6 निर्दोष को पकड़ा गया और उसके टुकड़े टुकड़े कर दिये गये और उसको फेंक दिया गया । भभरिया हेम्बरम के जैसा गांव नहीं है 19 जुलाई की सुबह भभरिया पोल की नींद टूटती है तो देखते हैं कि भभरिया गांव को दस हजार लोगों ने हलके हथियार के साथ घेर लिया है । अप्रैल महीने में जो 6 की हत्या की घटना हुई थी सरकार हत्या करने वालों में से किसी को नहीं पकड़ पाई लेकिन एक बी एम पी की टुकड़ी भेजी गई । उनको पता लग गया कि भभरिया वाले घिरे हुए हैं, बी एम पी जवान उन को हटाने में सफल नहीं हो रहे थे तो फायरिंग होने लगी और बाद में मरने-कटने की घटना घटी हंगामा मचा हुआ है । कांग्रेस (आई) के ही एक लोक सभा के सदस्य हैं बाबू सुमराय व उनकी पत्नी कुछ साल पहले देश को दुर्बल बनाने वाले, देश को टुकड़े करने वाले उग्र-वादियों के द्वारा पकड़ लिये गये थे । वह एक बड़े नामी हैं, ख्याति प्राप्त हैं, बड़ी उनकी तूती बोलती है । तीन दिनों तक कांग्रेस संसद बाबू सुमराय और उनकी पत्नी समृति सुमराय मर गई या जिंदा हैं यह पता नहीं लग रहा था । जब बाहर से बी आई पी होने के कारण भारी फोर्स पहुंचा तो फोर्स को भी अनुभव, प्रार्थना करनी पड़ी । तब जाकर किसी प्रकार से उनकी जान बची । उनकी घड़ी हाथ से निकल गई थी । लगातार यह हालत दिखाई दे रही है । वहां पर भारत सरकार या बिहार सरकार कोई हल निकालने के लिये दिखाई नहीं दे रही है । मैंने निरीक्षण

लिया था। एक स्थान पर जा रहा था अचानक देखा कि तीन सौ के लगभग लोग जंगल काटने में लगे हुए हैं। घबड़ाहट मुझे भी हुई। मेरे साथ जीप पर जो ड्राईवर बैठा था वह भी नरवस हो गया था। जब मुझे पता लगा कि वह नरवस हो गया तो मैंने उससे कहा उधर मत देखो। संयोग की बात है कि वे जंगल काटने में लगे हुए थे वे हमारी तरफ देख न पाये और हम निकल आए। लेकिन जगह-जगह भय और आतंक का एक साम्राज्य दिखाई दे रहा था। आश्चर्य यह हो रहा है कि चाईबासा के सिंघभूम एकता आगे बढ़ रहा है, उसकी पूरी टीम काम कर रही है। दूसरी ओर यह एक केन्द्र बन गया है। जी एल चर्चा रांची से लाखों की मात्रा में विषैले पेम्फलेट चलते हैं। पूरे जंगल में लगातार भरे रहते हैं। अवस्था यहां तक ही नहीं है बल्कि कोलाहन राष्ट्र की घोषणा उन्होंने की है। उस घोषणा के पीछे सशस्त्र क्रांति का उन्होंने आवाहन किया है। मैं सरकार को सूचित करना चाहता हूं कि उसी सवरिया गांव की बगल में एक मंझारी बस्ती है। अगर आप में हिम्मत है तो आप उस गांव में खर्च कराइये। अच्छे से अच्छे सो फिस्टिकेटड आर्म्स वहां पर एक नहीं सैकड़ों की तादाद में भरे पड़े हैं। सरकार वहां पर पहुंच नहीं पा रही है। मैं यह कहना चाहता हूं कि अगर सरकार ने इसका कोई रास्ता नहीं निकला तो स्थिति खतरनाक हो जाएगी। मैं इस पक्ष का भी नहीं हूं कि आप केवल मिलिटरी से इस समस्या को हल करने की कोशिश करें। ये आदिवासी कौन हैं? ये हमारे ही देश के निवासी हैं। ये विदेशी नहीं हैं। ये हमारे ही खून के लोग हैं। हमें उनकी जिन्दगी में विश्वास पैदा करना होगा। उनके जीवन का उत्थान करना होगा। वहां पर सड़कें बनानी होंगी, स्कूल खोलने होंगे और उन्हें पेट भरने के लिए आश्वासत करना होगा। उनके हाथ में काम देना होगा। उन्हें अपने जीविका पार्जन के लिए काम-धन्धा देना होगा। अगर सरकार ने इन लोगों के उत्थान के लिए कोई अच्छी योजना बनाकर नहीं रखी तो नतीजा यह होगा कि अभी तो उनका संबंध केवल देशी लोगों के साथ ही है, लेकिन अब देखने में यह आ रहा है कि विदेशियों से भी उनका संबंध आ रहा है। मैं एक छोटा सा कोटेशन पढ़कर सुना देना चाहता हूं। मुझे ऐसा लगता है कि अगर यह ध्यानाकर्षण प्रस्ताव इस सदन में मंजूर नहीं होता तो न तो इस सदन को इस समस्या के बारे में पता चलता और न ही देश को पता चलता। यह मैं 'स्टेटसमेन' अखबार का समाचार पढ़ रहा हूं, किसी अन्य समाचार पत्र का नहीं पढ़ रहा हूं —

"In December, 1981, leaders of 42 Commonwealth countries received copies of a confused letter addressed in London from the Government of Kolhan, Indian sub-continent, seeking help to sever from India."

ऐसी खतरनाक स्थिति वहां पर पैदा हो गई है। बहुत बड़े पैमाने पर यह समस्या पैदा हो गई है। यदि भारत सरकार ने और बिहार सरकार ने इस समस्या को हल करने के लिए कदम नहीं उठाये, इस समस्या को सुलझाने का प्रयास नहीं किया तो ये उपद्रवी जंगलों को काटने चले जाएंगे राष्ट्रीय सम्पत्ति का सत्यानाश करते चले जाएंगे। दूसरी ओर मैं यह भी कहना चाहता हूं कि ये आदिवासी हमारे ही रक्त के लोग हैं। ये गरीबी के

[श्री कैलाशपति मिश्र]

घिरे हुए हैं । उन्हें ऊपर उठाने के लिए तत्काल कदम उठाये जाने चाहिए । मैं चाहता हूं कि सरकार शीघ्र वहां पहुंचे, विदेशियों का प्रभाव वहां से समाप्त करे और वहां पर जो विदेशी मिशनरीज हैं उनको वहां से बाहर भेजा जाय ।

SHRI BISWA GOSWAMI (Assam): Mr. Deputy Chairman, Sir, the statement of the hon. Minister is very unsatisfactory. It seems that the Government of India has (not understood the gravity of the situation.

Sir, it has been reported in the "News Time" of 23i"d July last that even the Minister of Slate for home Affairs, when contacted by one correspondent, expressed her ignorance about the things going on in the Kolhan area. Sir, this situation has arisen as a result of total neglect of the backward tribal people of that area. Sir, it has been our experience that the Goverrment is unsympathetic towards the legitimate • grievances of the people living in remote areas. And as a result of that, these people have felt neglected and they have started this separatist movement Sir, the tribal people of Kolhan area claim themselves as citizens of an independent Kolhan State and they have formed their . own Government. The Kolhan movement was formerly started in December, 1982 when the supporters of the movement announced the formation of a self-styled Government of Kolhan under the British Commonwealth. Mr. Narayan Jonko was the Chief of the Government, and Mr. Christ Anand Topno was in charge of foreign affairs and its chief legal advisor.

MR. DEPUTY CHAIRMAN. That is already in the statement.

SHRi BISWA GOSWAMI; The main argument of the Kolhan freedom leaders is that they are not part of the independent country. Became they say that area was not . covered by the Transfer of Powe/' of 1947, and they have taken recourse to the Wilkinson Rule of 1836. What is surprising, Sir, is that even after 37 years of independence nothing has been done by the Government to do away with this rule. Even today the tribals feel that they are ruled by the Wilkinson rule The Panchayati rai system has not been extended to that area and they arc, therefore, feeling that they have reasons to believe that they still continue to be ruled by this rule. Sir, they have claimed for themselves a separate identity. Sir, I doubt that taking advantage of the backwardness of the area and the poverty and ignorance of the people; the tribal people, there may be some agents or some agencies which are trying to exploit the situation. I want to know from the hon. Home Minister whether the Christian missionarier have got a hand in instigating the tribal people there and also I want to know what concrete steps the Government will taka to win over the people of that area because simply by sending the military or the polke there the problem cannot be solved. *{Time bell tings).* And, unless and until the hearts of the people of that area are won over by adopting cortain steps and measures for the improvement of that area and removing the. legitimate grievances of the people you cannot win them over. Simply by sending the military and the police the situation can not be controlled. As a matter of fact, the police have been sent and there have been cases of firing on several occasions. In fact, in some places even the policemen do not dare to enter the places of Kolhan area. Therefore, Sir, it is highly necessary that Government take urgent measures to win over the people of that area and take steps for the improvement of the tribal people.

श्री राम चन्द्र भारद्वाज (बिहार) : मान्यवर, अभी मंत्री जी के वक्तव्य और अपने मित्रों को सुनने के बाद मुझे लगा कि वस्तु स्थिति से अभी तक हम दूर हैं । क्योंकि अगर कोल्हन का संबंध इस चीज से हो कि ट्राइबल्स को कुछ नहीं मिलता है, उनके समक्ष अभाव का वातावरण है और इसकी

वजह से इतना बड़ा उत्पात हो रहा है, ऐसा मानने में कठिनाई का अनुभव मैं करता हूं। बड़ी लम्बी कहानी 1936-37 से लेकर आज तक की है। माननीय मंत्री महोदय ने कहा कि अभी पिछले आठ महीनों में 17 हत्यायें हुई। मान्यवर, उन्हें याद होगा, वे जानती होंगी कि 25 अगस्त को जब एक हाट पर डाका पड़ा और जिसमें 13 आदमी गायब हुये उनमें 12 लाशों का पता नहीं चला। तो मैं यह जानना चाहता हूं कि पिछले 8 महीनों में 17 और इसके पहले 13 जो हाट से गायब हुए और 12 हत्यायें हुई, जिनकी लाशें नहीं मिलीं, इन सब को मिला कर इस बीच की कुल कितनी हैं, जितनी भी हत्याओं के बारे में जो जानकारी है। मान्यवर, यहां सारी बातें कही गई हैं और यह भी कहा गया है जो इसके नेता और अभी हमारे विश्वा गोस्वामी जी ने पूछा कि क्या इसमें फारेन मिशनरीज का हाथ है, तो वे इस सब को बहुत दूर तक ले गये हैं। मैं जो स्थिति समझता हूं वह यह है कि इसके दो प्रमुख कारण हैं, एक आर्थिक और दूसरा राजनैतिक। राजनैतिक मैं इसलिये कह रहा हूं मान्यवर, कि अभी तो उसे कोल्हनिस्तान की संज्ञा दी जाती और सभी वे इसे कोल्हन देशम की संज्ञा देते हैं। तो यह खालिस्तान और तेलुगू देशम से मिलता-जुलता हुआ एक शब्द है। कहीं से उनके मन में रीजनलिज्म का भाव पैदा हुआ या किया गया और उसके बाद स्वतन्त्र सत्ता के लिये उन्होंने कोल्हनिस्तान या कोल्हन देशम को स्वीकार करने की बात सोची। आज वे यहां तक पहुंच गये हैं कि स्वतन्त्र देश की बात नहीं करते हैं यह बात सही है उनका रवैया भी संभव में नहीं आता। वह डाक्टर रिबोल्टी से जाकर व्हाइट हाल में मिले लंदन के अन्दर वहां जाकर एक मेमोरेंडम दिया कि वह कामनवेल्थ से गाइड होते हैं इसलिये कामनवेल्थ के सदस्य हैं वहां पर डाक्टर रिबोल्टी ने यह आश्वासन दिया कि आपका इंग्लैंड में स्वागत है और आप यहां आ सकते हैं इस पर बात कर सकते हैं। इनके प्रतिनिधि जेनेवा गये और उन्होंने समझाया कि कामनवेल्थ के सदस्य हैं, उन्हें मान्यता मिलनी चाहिये, कामनवेल्थ के प्रतिनिधियों की एक कांफ्रेंस कोल्हनिस्तान कोल्हन देशम में होनी चाहिये जिससे यह सारी बातें साफ हो जाएं। इनको क्या आश्वासन मिला मैं नहीं जानता, मगर इतना जानता हूं कि वहां से जब लौट कर के आये तो 'चोगम' के समय भी उन्होंने इस तरीके की बात कही कि उनका राष्ट्र एक स्वतन्त्रराष्ट्र है जिसका एलीजिबेंसिस क्राउन से है। उन्होंने अपने यहां घोषणा कि की हम यूनिवर्सिटी भी बनायेंगे और उसका एफिलिवेशन आक्सफोर्ड से करायेंगे। ये सारी घोषणाएं उन्होंने अपने यहां की। मान्यवर, जब वे आए तो वे रोडीशन के चार्जेज में बन्द कर दिये गये। जिसको उनका आर्मी चीफ कहा जाता है, कि सुनते हैं कि वे सहारा के जंगलों में बैठ हुये हैं वहां से आपरेट कर रहे हैं जिनको पकड़ा नहीं जा सका है। बाकी इलाहाबाद और दूसरी जेलों में हैं। उनकी मांग यह है कि हमने स्टेट कहां मांगा था, हमने स्वतन्त्र राष्ट्र कहां मांगा था, हम तो स्वतन्त्र राज्य चाहते हैं। तो अब यह बंटवारा राज्यों में, बिहार के अन्दर जो राज्य हैं, वहां पर उनकी मांग उतर कर आई है। सही बात यह है कि उसका समर्थन वहां की जनता द्वारा उनको प्राप्त नहीं है और जब समर्थन प्राप्त नहीं है तो वहां की जनता के भी वागी है। आदिम जाति और आदिवासियों के भी विरोधी हैं, जो इसको नहीं मानते। अर्थ यह है कि न उस भूमि से उनको प्यार है और न उस भूमि के लोगों से उनको प्यार है न कोई स्वतन्त्रता की बात वे उनके लिये करना चाहते हैं। वे कहीं से कठपुतली की तरह से डोर खींची जा रही है और वह नाच रही है। उसका मुख्य कारण यह है डा० रामन्ना के अनुसार जो अभी छानबीन हुई है 73 हजार टन यूरेनियम सिर्फ कोल्हन, राजस्थान के उस क्षेत्र में अभी तक मिल

[श्री रामचन्द्र भारद्वाज]

गया है और उसकी जानकारी प्राप्त हो गई है भविष्य में आगे भी जानकारी प्राप्त होगी और इसकी खाने मिलेगी, मिलने की अभी भी आशा व्यक्त की गई है । जैसे कि माननीय कैबिनेट मंत्री मिश्र जी ने भी कहा कि सहारा साल जंगल एशिया का सब से बड़े जंगल है। वहां पर कोकिंग कोल प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है, थिरेनियम का जहां तक सवाल है वह उपलब्ध है, यूरेनियम की बात बहुत पुरानी चल रही है। यूरेनियम एटोमिक एनर्जी के लिए एक आवश्यक कपोनेंट है । उसके लिए बहुत दिनों से वहां लड़ाई चल रही है । इसके लिए कई एडिटर मारे गये । 'नया रास्ता' के एडिटर रोबोल का मर्डर हुआ । इत्तेफाक से 10–12 साल पहले बिहार प्रदेश कांग्रेस कमेटी ने उसकी जांच का भार मुझे दिया था और मैंने उसकी जांच रिपोर्ट बिहार कांग्रेस कमेटी के माध्यम से तत्कालीन गृह मंत्री श्री उमाशंकर दीक्षित को समर्पित किया था । सदनों में भी इसकी चर्चा चली थी और दूसरे सभी अखबारों ने उस पर सम्पादकीय टिप्पणी भी लिखी मगर उस समय सरकार को यह मानने में कठिनाई हो रही थी, कि यूरेनियम स्मगल हो सकता है, मगर जो वहां यूरेनियम स्मगल हो कर गया और उसका टेस्ट हुआ और माना गया कि यह यूरेनियम सब से अच्छा है इसकी क्वालिटी भी बहुत अच्छी है तथा उस क्षेत्र को किस तरह से उपेक्षा की गई..... जिससे कि इस मामले में सेल्फ सफीशियंट नहीं हो सके । मान्यवर, ऐसा माना जाता है कि सारी दुनिया में जो कोल्हान का क्षेत्र है वह सर्वाधिक सम्पन्न क्षेत्र है, उसके समान सम्पन्न क्षेत्र कोई नहीं है और जितने प्रकार के खनिज पदार्थ एक साथ वहां उपलब्ध हैं वे कहीं और नहीं हैं । तो इस पर सारी दुनिया की नजर है और खास तौर से उन राष्ट्रों की अवश्य है जो हमें कमजोर करना चाहते हैं । 16 जुलाई के "स्टैटसमैन" में इस तरह की एक टिप्पणी भी आई है जिसमें कहा गया है कि वहां जो उनकी टीम गयी तो कहा गया कि जिस तरह से खालिस्तान मूवमेंट में बाहरी हाथ है, विदेशी हाथ तो उसी तरह से यहां के मूवमेंट में भी विदेशी हाथ है। यह बात सही है कि वहां के लोग बड़ी गरीबी की स्थिति में हैं उसका कारण, सरकार ने उनको गरीब रखा है ऐसी कोई बात नहीं है। उसका कारण यह है कि वहां टोटल एक्सप्लायटेशन आफ द रिसोर्सेज नहीं हो पाया है, प्रापर डेवलपमेंट आफ द एरिया नहीं हो पाया है और ऐसे क्षेत्र जो बराबर से उपेक्षित रहे हों उनका एकाएक विकास कर देना भी किसी सरकार के लिए संभव नहीं होता। मगर ऐसे मामलों से इन हत्याओं से ऐसी वारदातों से तेलगू देशम की तरह अथवा खालिस्तान की तरह कोल्हिस्तान या कोल्हान देशम की मांग को दबाने के लिए दो चार लोग जो बहके हुए हैं वे अगर जेल में रहते हैं तो उसे कोई बहुत फर्क नहीं पड़ता। क्योंकि विचार जो है वह फैलता है, मनुष्य बंद हो जाता है विचार कभी कठघरे में बंद नहीं होता उस विचार को बंद करने के लिए मैं आपके माध्यम से माननीय मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि वहां के लोगों को जो कुछ चाहिए वह मुहैया कराये । मगर मुझे ऐसा लगता है कि सरकार ने अभी तक वह कदम नहीं उठाये हैं जो वहां के आंदोलन को समाप्त करने के लिए उठाने चाहिए। संभवतः सरकार ने इसको महत्व नहीं दिया है अन्यथा ये सारी वारदातें नहीं होती यह मैं कहना चाहता हूं (**समय की घंटी**)

मान्यवर, एक छोटी सी बात है जो कि बहुत बड़ी भी है। वहां के इंस्पेक्टर आफ पुलिस ने 25 अगस्त 1981 को एक एफ० आई०आर०दिया था जिसमें उन्होंने पूरी कहानी लिखी थी कि यहां यह हो रहा है, ऐसा-ऐसा उत्पात हो रहा है, ऐसी ऐसी संभावनाएं हैं, इसकी परिणीति खतरनाक हो सकती है और इसमें जल्दी से जल्दी कुछ होना चाहिए । यह उसका आशय था चूंकि वह एफ0 आई0 आर0 बहुत लम्बी है इसलिए मैं सिर्फ यह बतलाना चाहता हूं कि 16 जुलाई के "स्टैटसमैन" में लिखा है कि जो टीम गयी थी उसने एफ0 आई0 आर0 की कापी लेकर इसको पब्लिश किया है । इसकी ओर मैं ध्यान आकर्षित करूंगा और यह जानना चाहता हूं कि जब 25 अगस्त को वहां के पुलिस अधिकारी ने इस प्रकार एफ० आई० आर० लाज किया तो 25 अगस्त, 1981 से लेकर आज तक सरकार ने क्या कदम उठाये हैं जिसकी वजह से यह कदम आगे नहीं बढ़ता और इसमें रोकथाम की जा सकती तथा जो बाहरी और विदेशी या भीतर की ध्वंसात्मक ताकतें हैं उनसे बचा जा सकता ।

SHRI BADRI NARAYAN PRADHAN (West Bengalj: Mr. Deputy Chairman, Sir, I have read the statement made by the hon. Minister CQ this 'Kolhan Nation' problem, I have also heard tha speeches of friends here. This problem is there throughout India. You know about the revolt of the Nagas. There is also the Mizo problem. The sam_e problem is there ia Ihe North-East from where 1 come; among the Nepalis, there are Gorkhas. in West Bengal there i_s Jharkhand Mukti Morcha. In the North there is Uttarkhand pradesh, $Thes_e$ are the demands of these people and their demands are being aided by foreigners. In Darjeeling there ore Prantiya Parishad and Gorkha National Front who are demanding a separate district for Gorkhas and Nepalis. There was firing in these areas and two people died last year. So, these people are there and they are being supported by the Congress(I) Party. Jharkhand Mukti morcha is being supported by Cogress (I). The reasons is that th_e Congress (I) party i_s against the Left Front Government of West Bengal, in Tripura the Government is very much anxious to safeguard the interest of the tribal people over there. It has created the Tribal Development National Council, but the tribals over there are not satisfied. They are revolting against th_e government and the Congress (I) is supporting these people. Like the 'Kolhan' demand, in Jharkhand, in Tripura and in whole of the North East region these demands are coming up. *So,* this is the policy of the Government. Apart from th© support from the Congress(f). they are getting the support of the i'oceiga missionaries These people are uneducated illiterate. They are being incited. Otherwise, they are unable to do anything on their own.

I would therefore request the Treasury Benches to be vigilant and to do the things that are required to be done for the tribal people, so that they may not fall a' victim to the foreign people.

' This is all that I want to say.

श्री हुकमदेव नारायण यादव : उप-सभापति महोदय, माननीय कैलाश पति मिश्र जी ने जिस समस्या की ओर सरकार का ध्यान आकृष्ट किया है और माननीय हमारे मित्र, श्री रामचन्द्र भारद्वाज जी भी उस पर अपनी राय रख रहे थे, जो अभी समस्या है, उस समस्या का केवल एक ही रूप नहीं है । अगर उसके लिए कहा जाए कि सरकार की नीति ही जिम्मेदार है, तो सरकार की नीति के साथ साथ और बातें भी जिम्मेदार हैं । खास करके बिहार का जो दक्षिण बिहार है, उस इलाके की जो आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक स्थिति है, वह वहां के लोगों को दिन-प्रति-दिन मजबूर करती जा रही है कि वह किसी न किसी तरह से कोई आन्दोलन खड़ा करें और यह हालत आज से नहीं पहले से है । अगर मेरे पास समय होता ,तो मैं बता देता कि

[श्री हुक्मदेव नारायण यादव]

आज से ही नहीं, अंग्रेजी राज में और उससे पहले की वहां की स्थिति क्या रही है। लेकिन नये सिरे से आजाद भारत में देखें, तो उन आदिवासियों के क्षेत्रों से स्व० जयपाल सिंह एक बहुत बड़े नेता निकले थे और आदिवासियों के वह प्रतीक बन रहे थे, तो सत्ता की ओर से प्रलोभन देकर, पद और प्रतिष्ठा का लोभ देकर जयपाल सिंह को अपने में ले लिया गया। फिर आदिवासियों के अन्दर एक नेता, निकले, कई नेता निकलते गए। बागुन सम्बई

1 P.M.

जो इस खंड मुक्ति मोर्चा के थे जो कांग्रेस में आगे, स्वर्गीय श्री बागे निकले थे जो बिहार विधान सभा में प्रथम बार विरोध पक्ष के नेता बने थे, उनको भी कांग्रेस ने अपने में ले लिया। अभी शीबू सोरेन जो वहां का एक नौजवान निकला था जो लोक सभा में जीत करके आया है उन्हें भी लेने की वहां बात चलती है। विनोद बिहारी महतो कोई एक नहीं, अनेक नेता वहां निकलते गए, उनको कांग्रेस वालों ने अपने में मिलाने की कोशिश की उन नेताओं को मिलाने की बनिस्पत कभी भी सत्ता के जरिए कोशिश नहीं की कि वहां की जनता की जो कठिनाई है, उन कठिनाइयों को कैसे दूर करें। जनता की कठिनाइयों को दूर करने का तो प्रश्न नहीं रहा बल्कि उनके अन्दर से जो नेता निकले, उन्हें फुसला करके लकड़ी सुंघा करके गांव में जो लकड़ी सुंघवा होता है वह बतालों को लकड़ी सुंघा कर झोला में बंद कर लेता है उसी तरह कांग्रेस करती रही है। यह नीति बंद होनी चाहिए।

दूसरी बात मैं यह कहना चाहूंगा कि उत्तर बिहार के आप भी हैं उत्तर बिहार के माननीय मंत्री भी हैं राम चन्द्र भारद्वाज भी हैं, हम सब उत्तर बिहार के हैं, लेकिन गंगा के उस पार का आदमी सबसे ज्यादा शोषक है दक्षिण बिहार का जिसके कारण आज वहां के आदिवासियों की यह हालत है। गाजीपुर से, बलिया से, छपरा से आपके बनारस बलिया और बस्ती के जो लोग हैं जो जानते हैं धनबाद में जो बड़े हीरो समझते हैं जिन जिन का यह नाम है एक छत्र सम्राट बनाया है कहां से कहां चले गए। वे सब के सब जाकर उस एरिया में बैठ गए हैं और अपने डंडा के काम पर लाठी के बल पर सोटा के बल पर, उस आदिवासियों को शराब पिला देते हैं जमीन लिखा ले जाते हैं और जमीन लिखेगा एक एकड़ बेचेगा तो चढ़ा देगा उस पर 5 एकड़, उनका घर-साराडी जमीन जायदाद सब पर उस का उस चढ़ा पर कर रजिस्टर करा लेता है जब उस बेचारे का नशा टूटता हैं तो फिर कागज को ले करके जाता है कि हमको यह बेदखल कर रहा है, हमें इंसाफ चाहिए तो दरोगा जो पुलिस थाने में बैठा हुआ आदमी हैं, वह इंसाफ नहीं देता बल्कि उन गरीबों के ऊपर डांटे मारता है और उससे भी ज्यादा उन आदिवासियों की जो लड़कियां हैं उन इलाकों में आप जाकर देखिए कि इंसान का रुह कांप उठता है या नहीं उन आदिवासियों के घर में जो लड़कियां हैं उन लड़कियां को उस इलाके में जो गैर-आदिवासी अफसर जाते हैं जिनका नाम भी लिया है जो बड़े लोग तस्कर सम्राट माफिया गिरोह के होरों समझते हैं जो गैंग है, यह गैंग उन आदिवासियों की लड़कियों के साथ दिन दहाड़े बलात्कार करता है अपनी यौन तुष्टि के लिए लड़कियों को उठा उठा कर ले आता है। इन सब बातों की प्रतिक्रिया उन आदिवासियों के अन्दर जो पढ़े लिखे नौजवान हैं उन पर होती है। आजाद भारत में यह बताइये, मैं यह पूछता हूं सरकार से, गृह मंत्री जी से बताइये कि उस आदिवासी एरिया में आज तक भी एक जज के लायक पैदा नहीं हो सका। रांची में हाई कोर्ट का एक बेंच

बनाया गया लेकिन उसमें आदिवासी कोई जज नहीं बनेगा, आदिवासी कोई सरकारी वकील नहीं बनेगा, आदिवासी कोई बड़ा अफसर नहीं बनेगा, आदिवासी कोई ऊंचे स्थान पर नहीं जायेगा । सरकार में मंत्रिमण्डल बनेगा उस मंत्रिमण्डल में आदिवासी नहीं बनेगा और कोल्हन राष्ट्र कहते हो, इसको बनाने वाले आप हो जब केन्द्रीय मंत्रिमण्डल बनता है तो आपको ही नहीं कहता जनता पार्टी के समय में भी इस बात को लेकर मैं लड़ता था, जनता पार्टी में भी एक आदिवासी कैबिनेट मिनिस्टर नहीं बना, आपके यहां भी कोई आदिवासी कैबिनेट मिनिस्टर नहीं बन पाता । यही देश का दुर्भाग्य है कि देश की 14 प्रतिशत जनता जिसको आप संविधान के जरिए आरक्षण देते हो, नौकरी के लिए 14 प्रतिशत आरक्षण देते हो लेकिन जब मंत्रिमण्डल बनेगा तो एक भी आदिवासी कैबिनेट मिनिस्टर बनने के लायक नहीं है। कोई भी आदिवासी आदमी हाई कोर्ट या सुप्रीम कोर्ट का जज बनने के लायक नहीं है, कोई उस जंगल में बसने वाला बड़े बड़े ऊंचे अफसर बनने के लायक नहीं है। जहां उनके राजनैतिक शोषण का सवाल है, उनका राजनैतिक शोषण हो रहा है, आर्थिक शोषण का सवाल है, मेहनत करते हैं पसीना बहाते हैं कोयला निकालते हैं जंगल काटते हैं खदान में काम करते हैं लेकिन खाने के समय भूखा पेट और नंगा तन लेकर सो जाता है । उसको लूट कर कौन ले जाता है ? मैं केवल सरकार को जिम्मेदार नहीं मानता भारद्वाज जी, मैंने पहले कहा चाहे वह कोई भी दल हो, लेकिन उस इलाके में लूटने वाला माफिया कांग्रेस के दल का सरदार है, वह केवल सरकार से संरक्षण नहीं पाता है, चाहे वह सरकारी दल हो कोई विरोधी दल हो उनको संरक्षण मिलता रहता है । इसलिए मैं आपसे यह प्रार्थना करते हुए अपनी बात खत्म करना चाहूंगा कि इस पर सरकार को ध्यान देना चाहिए । आखिरी बात अभी जंगल एरिया में रहने वाले किसान, जो जंगल में बसने वाले हैं हम अपनी जमीन में पेड़ लगाते हैं उप सभापति महोदय लेकिन जंगल के जो स्टेट ट्रेडिंग कार्पोरेशन वाले वह है उनका काम है । तुम अपनी जमीन का पेड़ किसी के हाथ में बेच नहीं सकते हो । सरकारी जो खरीद करने वाली एजेन्सी है, उसी के हाथ तुम को पेड़ बेचना पड़ेगा । कोई भी कंपटीटर नहीं होगा । सरकार खरीदे, जो रेट तय करे, उस रेट पर आप बेचो, कहीं दस दिन में, बीस दिन में, एक महीने में, दो महीने में रुपया देंगे । हम किसान हैं, हम जमीन में पेड़ लगाते हैं, हमें बीज की आवश्यकता होती है । हम एक पेड़ काटते हैं, और बाजार से बीज खरीद कर लाते हैं । तो यह जो जंगल का शोषण, लकड़ी काटने का आदिवासियों का शोषण होता है जिन को सरकार ने अपनी रिपोर्ट में कहा है । यह एक दुखदायी है कि उन्होंने अपनी रिपोर्ट 1981-82 में अलग राष्ट्र बनाने के लिए यह सारे पर्चे-पुर्चे दिल्ली से लेकर कहां-कहां बांटे और सरकार ने आज तक किसी को गिरफ्तार नहीं किया, उनमें से किसी को पकड़ा नहीं, कोई जांच-पड़ताल नहीं की । तो सरकार कहां सोयी हुई थी, जो यह अलग राज्य बनाने के लिए यू० एन० ओ० में पर्चे बंटे, राष्ट्राध्यक्षों के बीच पर्चे बंट गए और सरकार आप प्रतिवेदन देती है । तो सरकार ने उनके खिलाफ क्या कार्यवाही की ? जो आज आतंक और अराजकता की स्थिति पैदा हो गई है, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक

[श्री हुक्मदेव नारायण यादव]

शोषण के खिलाफ जो जंगल में बसने वाले आदिवासी, बनवासी हैं, वे भारत माता के विद्रोही संतान बनकर खड़े हो गए हैं, उनसे निपटने के लिए, उनको अधिकार दिलाने के लिए सरकार एक आयोग की स्थापना करे, जो इन बातों को जांचे और जो उस इलाके में उनके उचित अधिकार हैं, उनको दिलाए और जो राष्ट्र-विरोधी तत्व हैं, उनसे सख्ती से निपटे । धन्यवाद ।

श्री उपसभापति : श्री चतुरानन मिश्रा, माननीय सदस्य जरा संक्षेप में करें । वैसे सब बातें आ गई हैं...

श्री चतुरानन मिश्रा (बिहार) : मान्यवर, जो समस्या अभी कॉल-अटेंशन के जरिए लाई गई है, वह गंभीर तो जरूर है, लेकिन इतनी भयावह नहीं है कि अलग राष्ट्र वहां बन जाएगा या ऐसा कुछ हो जाएगा, ऐसी स्थिति नहीं है । यह जरूर है कि वहां की सोशो-इकानोमी कंडीशन जो है, उसकी ओर सरकार का ध्यान नहीं जाता और इसलिए कुछ भी हो सकता है । मैं आपसे यही कहना चाहता हूं कि वहां 14 मिलियन टोटल आदमी रहते हैं उस पूरे छोटा नागपुर में, उस इलाका से मैं तीन बार असेम्बली में चुना गया हूं और इसलिए मैं जानता हूं । उस 14 लाख में से 1 लाख लोग अप्रूटेड हैं यानी 14 में से एक अप्रूटेड है । एक डी० वी० सी० कारपोरेशन के चलते वहां के पांच हजार घर पानी में डूब गए, 85 हजार एकड़ जमीन सदा के लिए पानी में डूब गई । लेकिन उससे कोई इंच मात्र भी फायदा नहीं हुआ । इधर जितना भी हटिया बना, बोकारो हुआ, बड़े-बड़े प्लांट बने, हमको उनके लिए कोई भी प्राथमिकता नहीं दी । वे लोग अप्रूटेड हुए, भिखमंगे होकर भागे फिरे । लकड़ी का कुछ कंपनसेशन दिया गया, उसमें भी कुछ नहीं हो सका ।

एक फारेस्ट एक्ट के बारे में आपको कुछ बताना चाहता हूं । उस फारेस्ट एक्ट के अंदर हमारे होम मिनिस्टर उस पर ध्यान करें । तो उसमें हर टैंथ आदमी पनिश्ड हो चुका है । टोटल पापुलेशन में दस आदमी में से एक आदमी सजा पा चुका है । जो लोग जंगल काटने की बात करते हैं, तो यह कहना कठिन है कि ठेकेदारों ने ज्यादा जंगल बरबाद किए या इन आदिवासियों ने किए । मैं जंगल काटने के पक्ष में नहीं हूं । लेकिन आपको स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि ठेकेदारों ने जंगल को बरबाद कर दिया । सरकार ने क्या किया । हम होम मिनिस्टर से कहना चाहेंगे कि इन्होंने जो वक्तव्य पढ़ा, अधूरा वक्तव्य दिया । उस कोल्हन एरिया में 300 मकान जो आदिवासियों के थे, तोड़ दिए । अगर सरकार न करे, तो मैं चुनौती देता हूं, मैं सदन से इस्तीफा दूंगा, अगर मेरी बात सच नहीं होगी । और जांच नहीं जाएगी । तीन सौ घरों को तोड़ दिया है पुलिस ने । पुलिस गोली-कांड में मारे गये हैं सौ से ज्यादा लोग । एक बार में ही 35 आदमी मारे गए हैं चाइबासा में । मंत्री महोदया उस वक्त भी थे और जानते हैं प्रयास किया गया, उसमें 76 स्कीमें थीं । उसमें था कि प्राधिकार बनाया जाए । उस वक्त जो पायलेट कर रहे थे, हमारी राम दुलारी सिन्हा जी, जो कि हमारे बिहार से ही कैबिनेट सदस्या थीं और बहुत इम्पार्टेंट सदस्या रही

है, इसलिए मैं याद दिलाना चाहता हूं कि वह प्राधिकार बना ही रह गया कागज पर। मैं भी उसका सदस्य था। हमने आदिवासियों की आकांक्षा के मुताबिक, उनकी अभिलाषा के मुताबिक उनकी जो पावर है, उसके मुताबिक प्रशासन नहीं देते है। हम जो यह बनाते हैं, बी० डी० ओ० वगैरह, यह सब इससे काम नहीं चलता है। यह समस्या नहीं है। हाईकोर्ट के जज के लिए, जज लोग हमारे ऐसे हैं और हमारे विधान ऐसे हैं, कोई आदमी हरिजन नहीं है, हर जगह आरक्षण के नियम लागू है, हाईकोर्ट में नहीं है। लेकिन यह नहीं कहा जा सकता कि हमारी सेवा में, चाहे सेंटर में या दूसरी सरविसेज में आदिवासियों को स्थान नहीं मिला है।

यह प्रश्न नहीं है। प्रश्न यह है कि उन के विकास के अनुरूप प्रशासन नहीं मिलता। हम बाहरी तत्वों को भेज देते हैं और जैसा डेवलप्ड एरिया में प्रशासन चलाते हैं वैसा ही वहां भी चलाना चाहते हैं जिस का नतीजा होता है कि सौ रुपये अगर हम खर्च करते हैं तो उस में एक रुपया भी एक्चुअल आदमी के पास नहीं जा पाता है। यह सब से बड़ा दोष है।

कमीशन की बात आई। बिना कमीशन के भी किया जा सकता है। हम को ऐसा लगता है कि हमारे संविधान में इस मामले में सफीशियंट प्रोविजन नहीं है कि रीजनल आटोनोमी दे सकें। जब तक हम उनको अपने प्रशासन में एसोशिएट नहीं करेंगे, सम्पूर्ण भारत के अंग के रूप में उनका विकास नहीं करेंगे, उन के प्रति जो हमारी घनघोर उपेक्षा है, जो उनको सताने का काम है उस को अविलम्ब रोकेंगे नहीं तब तक इस समस्या का निदान नहीं होगा। इसलिए मैं सरकार से अनुरोध करूंगा—इस में राज्य सरकार तो बिलकुल असफल हो गई है, मेरा अनुभव है, होम मिनिस्टर भी कह सकती है कि राज्य सरकार फेल हो गयी है—कि केन्द्रीय सरकार इस मामले में हस्तक्षेप करे ताकि जो हम फंडस देते हैं वे बढ़ाये जा सकें। रिप्रेसिव मैजर्स के जरिये इस समस्या का निदान नहीं होगा, बगावत होगी, अंग्रेजों के वक्त में बगावत हुई, हमारे वक्त में भी हुई। यह साल्यूशन नहीं है। इसलिए मैं अनुरोध करूंगा कि इस सम्बन्ध में अविलम्ब उचित जांच की जाय, विरोध पक्ष को भी इस में शामिल किया जाय, उन आदिवासियों से भी सहयोग लिया जाय और इस का हम लोग निदान निकाल सकें। (समय की घंटी) मैं दो मिनट और समय लूंगा। उन के लिए सब से फायदे का काम होता हाइडेल प्रोजेक्ट कोइल-कारो का विकास। यह 700 करोड़ की योजना है। बिहार सरकार उस को नहीं कर सकी। उसने दिल्ली को दे दिया। दिल्ली की केन्द्रीय सरकार को चार वर्ष हो गये, उस ने भी नहीं किया। कोई प्रगति का काम किया ही नहीं जा सकता क्योंकि ऐसा दूषित वातावरण हो गया है अविश्वास का। इस लिए मैं सरकार से अनुरोध करूंगा कि वक्त रहते इस में हस्तक्षेप करे।

SHRi B. SATYANARAYAN REDDY (Andhra Pradesh); Mr. Deputy Chairman, Sir> the statement...

SHRI J. K. JAIN (Madhya Pradesh): He is not concerned about his State. How is he concerned about... ?

SHRl B SATYANARAYAN REDDY: I am concerned with the whole country. You are concerned with Delhi only

SHRI I. K. JAIN; What are you doing in Andhra Pradesh?

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY: Do not disturb me.

SHRI I. K. JAIN; Your Chief Minister is also a party tn ihe Punjab affairs. *{Interruptions)* Yes, he did it and now he wants to do it in Madhya Pradesh also.

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY: You ?re a*

श्री चतुरानन मिश्र : उपाध्यक्ष महोदय, उन्होंने तो अलग कोल्हन स्टेट बनाने की बात की है, यहां तो कम से कम पूरा भारत एक रहने दीजिए ।

SHRI J. K. JAIN: Sir, he said I am a*,* We know where he was, in which party lie was and how he want to* in fo. Andhra Pradesh Chief Minister, N.T.R.,*

SHRI V. GOPALSAMY (Tamil Nadu): He must withdraw those remarks.

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY: The statement made is unsatisfactory and inadequate as it does not give a complete picture

MR. DEPUTY CHAIRMAN: Now yoi sav what you want to say.

SHRI B. SATYANARAYAN REDDY: According to this statement, the movement was started in 1978 *(Interruptions)*

MR. DEPUTY CHAIRMAN. What do you want to say? You say that

SHRI B SATYANARAYAN REDDY: During this period of agitation what are the problems faced by the people of that Kolhan area? There may be political, economic and social problems. I would like to know whether the Government has taken all necessary steps to improve the conditions of the tribal people, the people who live in that area. Of course, the minister has said in the statement that the Government are taking necessary steps to improve the condition of the people. I would tike to know from the Minister what are the measures which they hav© taken, whether they have constructed any projects, whether thev have started any industries. Simply making a statement

•ExptWKed as orderej by the Chair.

starting that all neeessary measures are being taken, wil) not do. We do not know For the first time we have come to know that such an agitation is being conducted in . that Kolhan area for an independent Kolhan State and the whole country was kept in the dark. The Minister must cleaily state what the problems of that area are, in what.way the Government is going to tackle them, whether this movement will spread or it will subside.

We do not know. Trie present statement will not give a satisfactory renort. At the same time, the Government have aho stated that some of the leaders of the movement have gone to London, to the UNO and that they have also distributed some pamphlets in the CHOGM, I would like to know whether the Government has written anything to the British Government in this connection. What have they done in the UNO? Where they are going abroad, when they are representing, is the Government taking any action? The Government has not taken any steps to improve the conditions of the people or tackle the agitation. The economic distress is the main reason tor agitation. It must be solved. Hare I would like to refer to one thing because Mr, Bhardwaj has stated in his statement that the Kolhan area people may have taken inspiration from Telugu Desam He has got poor knowledge of the events. With 'great respect I would saM that the Telugu Desam Party was started in 1982, and the people of the State of Andhra Pradesh have returned that Telengana party with an overwhelming majority against political corruption, the misrule and the nepotism of CongressQ) rule. The Telugu Desam Government, under the leadership of. N.T Rama Rao, is doing Its best to jmprnve the conditions of the people \n the State. So, 1 would like to know from the Minister whether the Central Government is taking all steps to improve the conditions of that Kolhan area. Until and unless you take steps to improve the economic, political and social conditions of the people of Kolhan this movement will not subside. I want that effective steps should be taken so that there is no divisioa of the country.

SHRIMATI RAM DULARI SINHA: Sir, i was all along listening to the criticisms and suggestions made by Shri Misftra, Shri Goswami, Shri Bharadwaj, •Shrj Pradhan. Shri Chaturananji and Shri Reddy, I do not know from where I should start my reply _

श्री हुक्मदेव नारायण यादव : मेरा नाम भूल गयीं आप ।

श्रीमती राम दुलारी सिन्हा : हुक्मदेव नारायण जी मेरे बड़े मित्र हैं । मैं उन की कद्र करती हूं ।

Sir, I have already slated about their demands But I am ^-.lrprised to listen from Mr. Reddy that he still wants to know what their demands were and he says that the Government is not seized of it He should know that the organisation is instigating tribals and demanding an independent Kolhan State. People who would not toe their line and support their demands are allegedly tortured or even liquidated.

The members Of the Sangh are mai.nly working in remote areas. They organise village meetings anj incite innocent tribals to take up arms against the Government, They are also reported to have been imparting guerilla warfare training to young tribals

Sir, as regards the cutting of the trrcs. Mr Mishra has supplied a list' to the Government. According to the reports received from the Government of India in 1980-81, the Kolhan Raksha Sangh started the agitation by felling forests in the Singhbhiim District. Till February, 1984 the members of the Sangh were responsible for cutting valuable trees from an area of about 20,000 acres and taking forcible possession of about 10,000 acres of forest land

During the recent past. Sir, the Gram Raksha Dal, headej by one Shri Curia Gangrai, has also become active ;n the Kolhan area. And it 's sa.'d that the Dal is suspected to be a^j organisation of th» Raksha Sangh Atiout that, *j* have those of extremist type. They have launched an agitation of abducting and subseqently liquidating the adivasis who do not toe thei,- line on the plea that they aie criminals. On *on* enquiry, i>. transpired that many of those abducted and reportedly killed by them had no known past criminal history. The first case of this kind was reported in the first week of September, 1983 in Tonto Police Station in the Singhbhum District. It is suspected that Shri K. C. Hembrom and his associates were responsible for kidnapping 30 adivasis and subsequently killing them. So far 23 cases have come to the notice of the police, in which, I have already stated, 17 persons were killed and 49 were abducted whose whereabouts are not known. In some of the cases certain adlvasj women were branded as *dayan.* They were kidnapped and subsequently murdered As regards the help from the missionaries, there is a serious apprehension that they are getting the financial assistance from missionaries. It has been found that missionaries press had a hand in the publication brought out by this Sangh. There are proofs that the missionaries are giving financial assistance to them in fighting out cases filled against the Sangh leaders in the Courts Sir the Government are vigilant about the activities of these organisations i.r, Kolhan area and have taken several measures to deal with the situation:—

(1) law and order enforcement machinery in the area has been suitably strengthened and reinforced.

(2) Sir. the important functionaries of the Sangh, as Mr. Hukmdeo Narayan Yadavji had enquired from me about the important functionaries' of the Sangh, they have been identified and prosecution has been sanctioned against its 16 members for offence and sedition. Among them, Shri Christ Anand Topno and Shri Ashwini Kumar Sawaian were arrested on 26th Octobei, 1981 and sent to jail Subsequently. Shri Bishram Lakra. Superintendent G.E.L. Press Ranchi was also arrested and sent to jail. However, they have been released on bail under the orders of Patna High Court, Ranchi - - -----it *r.f* ,Ifr;f netition dated

[Shrimati Ram Dularj Sinha]

25-5-1984 and 29-5-1984 respectively. Sir, steps are being taken to arrest the other accused persons.

(3) Sir, in order to prevent illegal felling of trees, army pickets with Magistrates have been deputed at 12 sensitive pockets as a result of which instances of illegal forest felling have decreased considerably.

(4) Sir, development activities have been intensifies in the area particularly for providing drinking water, education, medical and fair pricg shops facilities.

(5) Sir, local administration authorities have been suitably instructed to look into the grievances of the people and take necessary immediate steps for the redressal of the same.

(6) In view of the unrest prevailing in the Tribal areas, in the State of Bihar, the Prime Minister has observed that the matter of securing statutory representation of tribals in institutions functioning iu the tribal areas in Bihar should be taken up with a sense of urgency. The Secretary, Ministry of Home Affairs has already requested the Chief Secretary to the Government of Bihar to initiate urgent action on this matter

(7) Sir, a Special Central Assistance, as I have already stated for the Tribal areas in the state of Bihar, has been increased from Rs. 15.66 crores in 1983-84 to Rs. 18.23 in 1984-85.

(8) Sir, after a recent visit of the Joint Secretary, Tribal Development of the Ministry of Home Affairs of the area, j have specifically requested the State Government of Bihar to initiate action on dovetailing of the village office system of Mankis and Mundas into the existing Panchayati Raj system an^ to energise enforcement of Land Alienation Legislation, cooperative enrolment, plantation of minor forest produce specis, relevant to the tribal economy and eradication of bonded labour system in the area.

Sir, I have also decided to discuss the matters concerning tribal unrest with the Ministry of Tribal Development Government of Bihar and the Government of Bihar have been requested to furnish agenda notes on the topics to be discussed.

As regards the suggestions by the hon. Members for the development of this area, it will be included in the agenda of my discussion with the concerned Minister of Bihar when he comes for discussion.

Sir, *i* would like to express my thanks to the hon. Members for their suggestions and criticisms during the debate.

Thank you.

श्री उप सभापति : सदन की कार्यवाही 2.25 बजे के लिए तक को स्थगित की जाती है

The House then adjourned for lunch at twenty-five mimrtes past one of me clock.

The House reassembled after lunch at twenty-eight minutes past two of the clock.

Mr. Deputy Chairman in the Chair.

MR. DEPUTY CHAIRMAN; Now we will take up special Mentions. Mr. V. Gopalsamy.

REFERENCE TO THE ATROCITIES REPORTEDLY BEING COMMITTED ON TAMIL SPEAKING PEOPLE IN SRI LANKA

SHRI V. GOPALSAMY (Tamil Nadu): Mr Deputy Chairman, Sir, x would like to draw the attention of the Government through you, to the continous persecution of Tamil; in Sri Lanka. Sir, since the 23rd of this month. Tamils all over Ihe world have observed a one-week mourning for the terrible tragedy which took place during the month of July last year. Due to the blanket censorship in Sri Lanka, the atrocities committed against the Tamils there, particularly against the youths, do not come t0 tight- But the Tamils are attacked, particularly the youths, they are detained in cells and to elicit information, indescribable horrors are committed against them. Because of this, a heavy exodus has started si«ce July last year and during my recent visit to Europe, I visited some of the camps in West Germany. Switzerland, Italy and also France where thousands of youth are stranded like international